हिंदी साहित्य का बदलता परिप्रेक्ष्य: परंपरा से आधुनिकता तक

डॉ. कृष्ण कुमार पाल

हिंदी साहित्य का बदलता परिप्रेक्ष्य: परंपरा से आधुनिकता तक

डॉ. कृष्ण कुमार पाल

Surya Multidisciplinary Publication

© Editor

Authors/contributors are solely responsible for the originality/authenticity/ accuracy of the ideas/ information/ views/ content/ data produced in their respective papers. Publisher and the Editor shall not be responsible for any liability arises on account of any civil or criminal proceeding(s) in any court/tribunal judicial body under any law for the time being in force. All rights including copyrights of translation etc are reserved and vested exclusively with the Surya Multidisciplinary Publication. No part of this publication shall be reproduced or transmitted in any form or by any means, including electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise or stored in any retrieval system of any nature without the express permission of the Surya Multidisciplinary Publication.

Book: हिंदी साहित्य का बदलता परिप्रेक्ष्य: परंपरा से आधुनिकता तक
Editor: डॉ. कृष्ण कुमार पाल
Edition: 2025
ISBN: 978-93-49724-06-8
Price: 599/-
Publisher : Surya Multidisciplinary Publication
407,Ramlila Maidan Malviya Nagar Gonda, Uttar Pradesh (India)- 271001
Phone: +91- 9415093911
Email: info@suryampublication.com
Printed By: Global Printing Service, Delhi

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य का बदलता परिप्रेक्ष्य: परंपरा से आधुनिकता तक एक ऐसा गंभीर प्रयास है जो हिंदी साहित्य की समृद्ध परंपरा से लेकर उसकी आधुनिक चिंतनधारा तक की यात्रा को समझने और प्रस्तुत करने का प्रयत्न करता है। यह पुस्तक उन सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं भाषाई परिवर्तनों की पड़ताल करती है, जिन्होंने समय के साथ-साथ हिंदी साहित्य को प्रभावित किया और उसकी दिशा व दृष्टि दोनों को परिवर्तित किया।

इस ग्रंथ में हमने प्रारंभिक काल की लौकिकता, भक्तिकाल की आध्यात्मिक चेतना, रीतिकाल की शृंगारिक प्रवृत्तियों से लेकर आधुनिक काल की यथार्थपरक दृष्टि, प्रगतिशील चिंतन और समकालीन विमर्शों – जैसे दलित साहित्य, स्त्री लेखन, और उत्तरआधुनिकता – तक के व्यापक फलक को समाहित किया है। यह न केवल साहित्यिक विधाओं में आए बदलावों का विश्लेषण करता है, बल्कि उन विचारधाराओं और सामाजिक आंदोलनों को भी रेखांकित करता है, जिन्होंने लेखन की भाषा, स्वर और सरोकारों को नया आयाम प्रदान किया।

इस पुस्तक का उद्देश्य केवल साहित्यिक विकास की रेखांकित यात्रा करना नहीं है, बल्कि पाठकों को यह भी समझाना है कि साहित्य समाज का दर्पण होने के साथ-साथ एक सक्रिय परिवर्तनकारी शक्ति भी है। हिंदी साहित्य ने समय-समय पर न केवल यथास्थितिवाद को चुनौती दी है, बल्कि नए मूल्यों और मानवीय सरोकारों को भी स्वर दिया है।

हमें आशा है कि यह पुस्तक विद्यार्थियों, शोधार्थियों, अध्यापकों और हिंदी साहित्य में रुचि रखने वाले सभी पाठकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी और उन्हें हिंदी साहित्य की गहराई, विविधता और विकासशीलता को समझने में सहायता प्रदान करेगी।

— संपादक : डॉ० कृष्ण कुमार पाल

Contents

1. भारतीय ज्ञान परंपरा और हिंदी साहित्य की जड़ें — 1
डॉ. लोहंस कुमार कल्याणी

2. डिजिटल युग में हिंदी लेखन: ब्लॉग, पॉडकास्ट और सोशल मीडिया — 13
डॉ. ओम प्रकाश यादव

3. भविष्य की ओर: हिंदी साहित्य की संभावनाएँ और चुनौतियाँ — 22
डॉ. मुक्ता टंडन

4. बोलियों और भाषाओं का साहित्य में योगदान — 31
दीपा निर्मल

5. युवा लेखन और साहित्य की नई दिशाएँ — 37
ब्रजेश कुमार तिवारी

6. प्रवासी हिंदी साहित्य: भारतीयता और अस्मिता का संघर्ष — 44
राजेंद्र मिश्रा

7. हिंदी बाल साहित्य और डिजिटल माध्यम: मनोरंजन से शिक्षा तक — 53
डॉ. कृष्ण कुमार पाल

8. हिंदी साहित्यिक पत्रिकाएँ: प्रिंट से डिजिटल तक का सफर — 61
डॉ. नीरज यादव

9. डिजिटल तकनीक और साहित्यिक आलोचना: एक अध्ययन — 69
डॉ. धर्मेन्द्र कुमार सिंह

10. एआई और हिंदी लेखन: सृजनात्मकता बनाम कृत्रिमता का द्वंद्व — 77
डॉ. तारकेश्वर स्वरूप मणि

11. हिंदी साहित्य में क्यूआर कोड, ई-बुक और ऑडियोबुक की भूमिका 84
डॉ. प्रतिभा सिंह

12. हिंदी साहित्य में स्त्री स्वर: आत्मकथात्मक लेखन की प्रवृत्तियाँ 92
स्वेता सिंह

13. पाश्चात्य प्रभाव और वैश्वीकरण की छाया में हिंदी साहित्य 100
डॉ. निधि शुक्ला